भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा "जलवायु परिवर्तन के दौर में सोयाबीन के बीमारियों का प्रबंधन" विषय पर वेबिनार का दिनांक 7 जून 2020 को आयोजन की प्रेस नोट

भा.करी.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा आयोजित किये जा रहे वेबिनरों की श्रृंखला में, आज दिनांक 7 जून, 2021 को "जलवायु परिवर्तन के दौर में सोयाबीन के बीमारियों का प्रबंधन" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमे महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं बिहार के किसानों समेत लगभग 82 प्रतिभागियों ने भाग लिया|

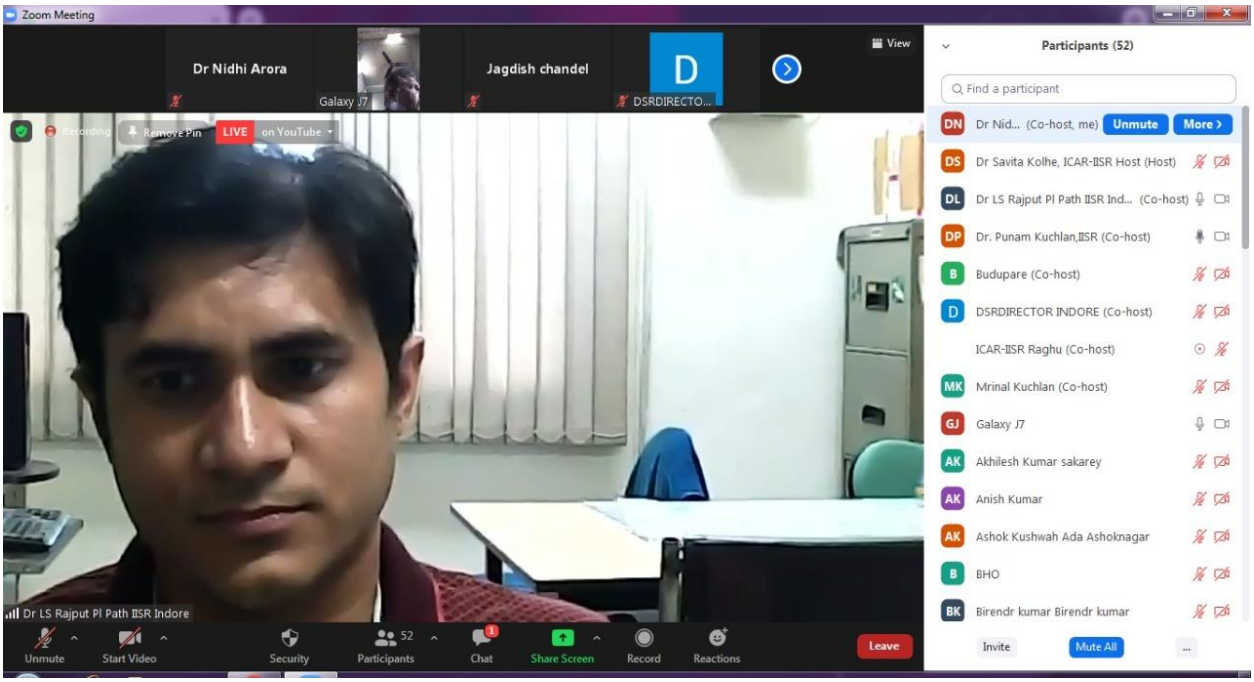

इस अवसर पर विशेष वक्ता भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान इंदौर के डॉ लक्षमण सिंह राजपूत (वैज्ञानिक-पादप रोग) ने अपने व्याख्यान में बताया कि किसानों द्वारा उगाई जाने वाली सोयाबीन की फसल में राज्यवार मुख्य रूप से कौन-कौन सी बीमारियाँ लगती है और उनकी किस तरह से पहचान की जाए| उनके अनुसार यदि बीमारी की सही तरह से पहचान न हो तो उसके नियंत्रण करने में गलतियाँ होकर फसल के उत्पादन में नुकसान होता हैं| उन्होंने कहाँ कि सोयाबीन के पौधों का हर पीला पत्ता, पीले मोज़ेक की वायरस जनित बीमारी के कारण नही होता| बल्कि कभी-कभी अतिवर्षा के कारण भी सोयाबीन की पत्तियां पीली हो जाती जिसे हम बीमारी मान लेते हैं |

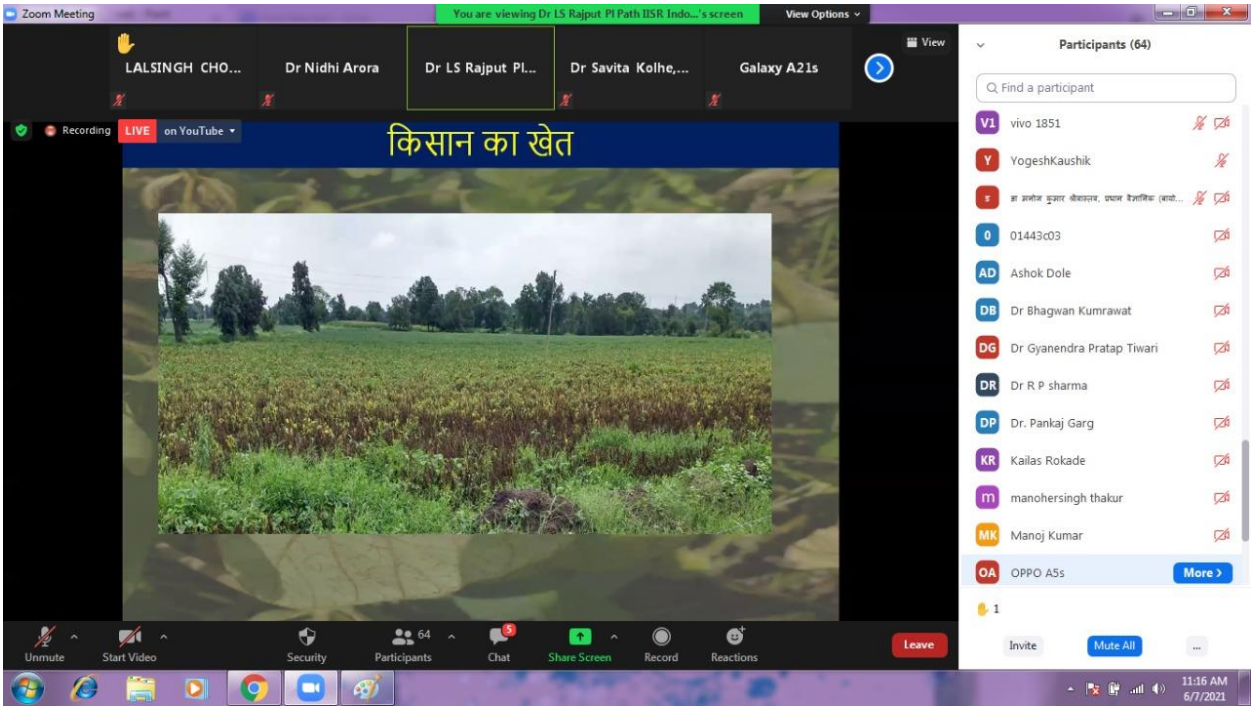

डॉ. लक्षमण ने इस अवसर पर यह भी कहाँ कि विगत 2-3 वर्षों से सोयाबीन में एन्थ्राक्नोस या फली झुलसन नामक बीमारी का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके कारण सोयाबीन की पैदावार में काफी नुकसान देखा गया है| उन्होंने सबसे अधिक क्षेत्र में बोई जाने वाली सोयाबीन की किस्म जे.एस. 95-60 के बारे में कहा कि यह किस्म फली झुलसन बीमारी के लिए पूरी तरह संवेदनशील है | वर्तमान स्थिति में यह बीमारी मध्य प्रदेश में बड़े पैमाने पर फ़ैल गयी है, इसलिए हमें दूसरी किस्मों को भी उगाना चाहिए, ताकि इस बीमारी से फसल में होने वाले नुकसान को कम किया जा सके | उन्होंने सुझाया कि सोयाबीन की अन्य किस्में जैसे जे.एस. 20-69 और जे.एस. 20-98 इन बीमारियों के लिए प्रतिरोधी है, अतः इन किस्मों को खेती में शामिल करेंगे तो खेती लाभदायक होगी| इसके उपरांत उन्होंने पीला मोज़ेक वायरस को फैलानी वाली सफ़ेद मक्खी को किस प्रकार से नियंत्रित किये जाने वाले सभी उपायों पर भी चर्चा की| साथ ही उन्होंने बीमारी पीले मोज़ेक रोग के साथ-साथ फली झुलसन, मायरोथिसियम लीफ स्पॉट एवं राय्ज़ोक्टोनिया एरीअल ब्लाईट जैसे रोगों के लक्षणों को विस्तार से बताया एवं उनको प्रबंधन कैसे किया जाये इस पर चर्चा की| कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान की निदेशक, डॉ. नीता खांडेकर ने की तथा इस वेबिनार की समन्वयक डॉ पूनम कुचलन द्वारा सभी संबंधितो को धन्यवाद् ज्ञापित किया|